KITAB DOST
SUNNI BOOKS

Scanned with CamScanner

माहनामा **माहे तैबा** जोधपुर

इल्मी, दीनी और इस्लामिक मासिक पत्रिका

रूहानी सरपरस्त
मुफ्ती-ए-आज़म राजस्थान
अल्लामा मुहम्मद अशफाक़ हुसैन नईमी

एडीटर
एम फ़य्याज़ अहमद रज़वी

जनवरी 2022 • साल 31

जमादिल ऊला-जमादिल उख़रा 1443

शुमारा - 360

एक शुमारा	30 ₹
सालाना (राजस्थान)	300 ₹
सालाना (बैरुने राज.)	350 ₹
कोरियर से (सालाना)	500 ₹
रजिस्टर्ड डाक से	550 ₹
बैरुनी मुमालिक	2000 ₹
लाइफ मेम्बर	8500 ₹

अनवारे माहे तैबा

ड्राफ्ट्स, मनीआर्डर्स और ख़तो किताबत करने का पता

माहनामा **माहे तैबा**

मोहल्ला लखारान जोधपुर 342002 (राज.)

फोन : 0291-2637992 (O)

Bank A/C No. 61087516724 MAHE TAIBA
SBI BANK (Gulab sagar Branch)
IFSC Code : SBIN0031762

e-mail : mahetaibamonthaly@gmail.com

फितना ख़्वाबीदा है, जो उसे जगाए उस पर अल्लाह की लानत है।

मैं माहे तैबा हूं

(माहनामा माहे तैबा की ज़िन्दगी की दास्तां खुद माहे तैबा की ज़बानी)

जी हां, माहे तैबा! एक कामिल और मुक्कमल, हिन्दी में छपने वाला दीनी माहनामा हूं, मैं। आसान ज़बान और हिन्दी में छपने की वजह से आज मौजूदा मुआशरे (समाज) की पहली पसंद बन चुका हूं। हर महीने कारेईन (पाठकों) को मेरा बेसब्री से इंतज़ार रहता है। जब उनके घर मेरी रसाई (पहुंच) हो जाती है तब उनकी खुशी का ठिकाना नहीं रहता। ठीक इसी के उलट जिन के घर मुझे डाकखाने के ज़रिए पहुंचने में देरी हो जाती है तो उनकी धड़कने तेज़ हो जाती है या जहां रास्ते में ही मेरा सफर डाकखाने में ही रुक जाता है तो कारेईन की बेताबी इतनी बढ़ जाती है कि मत पूछो। न पहुंचने के बाद दफ्तर माहे तैबा के टेलीफोन की घण्टी घन घनाने लगती है और मेरी गैरहाज़री की वजह जानने की कोशिश की जाती है। आख़िरकार दफ्तर की ओर से दुबारा भेज कर पाठकों के दिलों को राहत व सुकून पहुंचाने की कोशिश की जाती है।

बुजुर्गों और दोस्तो! मेरी उम्र 30 साल हो चुकी है। मैं यहां अपनी तीस साला ज़िदगी के बारे में आप लोगों से कुछ गुफ्तगू करना चाहूंगा। मेरी जिन्दगी में कई उतार चढ़ाव आए, कई परेशानियों का सामना भी करना पड़ा मगर आप लोगों की लगन, प्यार, मोहब्बत और तआवुन की वजह से राह की हर मुश्किल आसान होती चली गई और 30 साल का एक लम्बा अरसा किस तरह बीत गया, मालूम ही नहीं चला। मैं हिन्दी लिपी में हर महीने छपने वाला एक दीनी और इस्लामी रिसाला "माहे तैबा" हूं। माहे तैबा का उर्दू में मतलब "मदीने का चांद" होता है। ये दो लफ़्ज़ों से मिल कर बना है, "माह" यानी "चाँद" और "तैबा" यानी "मदीना शरीफ़"। इस तरह से इसका पूरा माअना (मतलब) मदीने का चाँद।

मेरी इस 30 साला ज़िन्दगी में कई उतार चढ़ाव और बदलाव के दौर आए। मुझे इस लम्बी मुद्दत तक जारी रखने में बड़ी दुश्वारियों का सामना करना पड़ा, सहाफ़त (पत्रकारिता) के इस मैदान में कई ख़ारदार (कंटीली) झाड़ियां आई। एक मर्तबा मेरे न छपने की नौबत भी आ गई लेकिन एडीटर साहब ने हिम्मत से काम लेते हुए मेरा ये सफ़र जारी रखा।

मेरी ज़िन्दगी की शुरुआत कैसे हुई? आइये मैं आपको बताता हूं। अगस्त 1991 का वाक़िआ है, एक दिन राजस्थान की अज़ीम दर्सगाह दारुल उलूम इस्हाक़िया में एक हदीसे मुक़द्दसा पढ़ाते हुए हज़रत अल्लामा अल्हाज मुफ़्ती मोहम्मद फ़य्याज़ अहमद रज़वी नागौरी के दिल में दीनी और मिल्ली ख़िदमात के लिए आसान और साफ़ ज़बान में एक दीनी और मज़हबी रिसाला निकालने का ख़याल आता है। वे इस ख़याल को हकीक़त में बदलने के लिए मज़बूत इरादे के साथ दिन रात दीनी मिशन पर चल पड़ते हैं। सबसे पहले उन्होंने भिवण्डी से उर्दू रिसाला माहनामा अल

बेहतरीन ईमानी दोस्ती ये है कि तेरी दोस्ती और दुश्मनी अल्लाह के लिए हो।

मीज़ान के एडीटर अल्लामा सय्यद अबू मुहामिद जीलानी मियां से राब्ता किया और उनके मशविरे से एक बिल्कुल नई पहल करते हुए मुझे यानी "माहे तैबा" को मंज़रे आम पर लाने की वो मुबारक घड़ी आ ही गई जब उन्होंने दीनी मालूमात से लबरेज़ एक माहनामा शुरु कर ही दिया। मुझे हिन्दी में इसलिए छापा गया जिससे कम पढ़े लिखे लोग और जिनको उर्दू नहीं आती उन लोगों को भी किताब पढ़कर समझने में आसानी हो सके। भारत सरकार से रजिस्ट्रेशन और डाक की तमाम कार्यवाइयों के बाद जनवरी 1992 में कुल 32 पेज का पहला शुमारा शाया किया गया। पैग़म्बरे आज़म सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और हुज़ूर ग़रीब नवाज़ व मुफ़्तीए आज़म हिन्द के तुफ़ैल और बाबाए कौमो मिल्लत मुफ़्तीए आज़म राजस्थान अल्लामा मुफ़्ती अशफ़ाक हुसैन साहब नईमी की सरपरस्ती में 27 दिसम्बर 1991 को दारुल उलूम इस्हाक़िया जोधपुर के आंगन में औलमाए किराम और कौम के दानिश्वरों की मौजूदगी में एक शानदार प्रोग्राम के तहत मेरे इजरा (विमोचन) की रस्म अदा की गई। रस्मे इजरा की अदायगी हुज़ूर मुफ़्तीए आज़म राजस्थान अल्लामा मुफ़्ती अशफ़ाक हुसैन नईमी के मुक़द्दस हाथों से अदा की गई। इस प्रोग्राम के दूसरे अहम किरदार थे मौजूदा दौर के रियासते राजस्थान के वज़ीरे आला (मुख्यमंत्री) व तत्कालीन केन्द्रीय कपड़ा राज्यमंत्री आली जनाब अशोक गहलोत साहब।

शहरे आफ़ताब जोधपुर से तुलूअ़ हुए इस माहताब की किरने न सिर्फ पूरे हिन्दुस्तान बल्कि बेरूने मुल्क तक क़ौम के बीच फ़ैली बुराइयों में इल्म, मुहब्बत और भाईचारे की रौशनी को फैला रही हैं।

मेरी इस 30 साला ज़िन्दगी में कई उतार चढ़ाव और बदलाव के दौर आए। मुझे इस लम्बी मुद्दत तक जारी रखने में बड़ी दुश्वारियों का सामना करना पड़ा, सहाफ़त (पत्रकारिता) के इस मैदान में कई ख़ारदार (कंटीली) झाड़ियां आई। एक मर्तबा मेरे न छपने की नौबत भी आ गई लेकिन एडीटर साहब ने हिम्मत से काम लेते हुए मुफ़्तीए आज़म राजस्थान की दुआओं के सहारे मेरा ये सफ़र जारी रखा। अगर वो रिसाला मुझ जैसा मज़हबी है तो और भी दुश्वारियां घेर लेती हैं। इसके अलावा कारेईन का लगाव और हमदर्दी ने भी मुझे बार बार संभलने का जज्बा और हौसला दिया। ख़ास तो ख़ास, बल्कि आम लोगों का झुकाव भी दीनी रिसाले पढ़ने की तरफ़ कम नज़र आता है। ग़ैर मज़हबी, फ़िल्मी दुनिया के क़िस्से और रोमेन्टिक नॉविल्स व कहानियों की किताबें पढ़ने में हज़ारों रुपए ख़र्च कर देंगे मगर दीनी रिसालों की तरफ़ अवाम का झुकाव बहुत कम होता है, जबकि तहरीरी शक्ल में दीन की मुकम्मल जानकारी दीनी और मज़हबी किताबों से ही होती है। रिसालों की ज़िन्दगी हर उस एडीटर से पूछी जाए जो मज़हबी और दीनी रिसाले निकालते हैं। मैं मुदीरे आला (एडीटर साहब)

लोगों के पास अपनी ज़रूरतें कम ले जाओ इसमें ज़िल्लत व रूस्वाई है।

की खुलूस नीयती, बुजुर्गों की दुआ और आपकी मुहब्बत की वजह से अब तक ज़िन्दा हूं।

कई बरसों पहले हिन्दुस्तान के एक बड़े मशहूर मुसन्निफ़ और रईसुल कलम, अल्लामा अरशदुल कादरी ने मौलाना फ़य्याज़ अहमद साहब रज़वी से कहा था कि अगर रिसाला 3 बरस तक आख़री सांसें लेते हुए भी मेअ़यारी मज़ामीन के साथ वक़्त पर शाए (छपता) होता रहे और उसे इश्तेहारात (विज्ञापन) मिलते रहें, तो उसके ज़िन्दा रहने की कवी उम्मीद है। वरना कितने ही दीनी माहनामे अपनी मुद्दत से पहले ही दम तोड़ देते हैं और उन्हें बग़ैर कफ़न ही के दफ़्न होना पड़ता है।

लोगों के सामने मुझे लाये जाने का मकसद हिन्दी जानने वाले लोगों को दीने-इस्लाम से क़रीब करना और रुबरु कराना था इसीलिए दीनी ज़रुरत के मुताबिक़ और वक़्त को देखते हुए ही मुझे मंज़रे आम पर लाया गया। हिन्दी हमारी मुल्की ज़बान है, हर धर्म व मज़हब के लोग करीब-क़रीब ये ज़बान जानते हैं। आसान और सलीस ज़बान के साथ वक़्त की पाबन्दी ने मुझे कौमो मिल्लत की पहली पसन्द और एक ज़रुरत बना दिया। शहरे आफ़ताब जोधपुर से तुलूअ़ हुए इस माहताब की किरने न सिर्फ पूरे हिन्दुस्तान बल्कि बैरुने मुल्क तक कौम के बीच फ़ैली बुराइयों में इल्म, मुहब्बत और भाईचारे की रौशनी को फैला रही हैं। कुरआनो हदीस के साथ दीनी व ज़रुरी मसाइल के अलावा कई तारीख़ी जानकारियों को एक साथ जमा कर माहनामे की शक्ल में मुझे अवाम के सामने पेश किया गया। नेक इरादे, बुलन्द हौसले और दीनी ख़िदमात के जज़्बे के साथ शुरु किए इस काम ने ही आज मुझे औजे सुरय्या की बुलन्दियों पर पहुंचाया। आज के पुर फित्न दौर में अवाम को मेरी ज़रुरत और चाहत है। कुरआन व हदीस के अलावा हम्दे बारी तआ़ला, नअ़ते रसूल, बाबुल हदीस, शरई अदालत, ख़वातीन व बच्चों के लिए तालीमी, अख़लाकी और अदबी मज़ामीन के साथ अम्बियाए किराम व औलियाए इज़ाम की सवानेह-हयात पर मुश्तमिल होने के साथ-साथ बेहतरीन पेजमेकिंग और ख़ूबसूरत टाइटल की वजह से भी हर महीने तमाम कारेईन को मेरा बड़ी बे'सब्री से इंतेज़ार रहता है। कारेईन हज़रात की दिली मुहब्बत और बेशकीमती मशवरों की बदौलत वक़्त की ज़रुरत के मुताबिक़ कई तब्दीलियों के दौर भी मुझे देखने को मिले। अल्हम्दु लिल्लाह! मेरी ज़िन्दगी के बीते 30 बरसों में मेरे 350 से भी ज़्यादा शुमारे अब तक पाबन्दी के साथ शाया हो चुके हैं। ख़ास बात यह है कि हर इस्लामी महीने के मुताबिक़ उस माह के शुमारे में मुसलसल मज़ामीन छापे जा रहे हैं, जिन्हें अवाम बेहद पसंद कर रही है। मेरा कारेईन तक पहुंचने का अहम ज़रिआ महकमए डाक है। डाक खाने के जरिए मेरा सफ़र भी बड़ा दुश्वार और निहायत ही दिलचस्प है।

आईये! मैं आपको अपने डाक घर से आपके घर तक के सफर के हालात से रुबरु करा दूं - "मेरा सफर RMS डाकघर, जोधपुर से शुरु होता है। यहीं से मुझे अलग अलग शहरों, गांवों और ज़िले के मुताबिक छांट कर वहां के पोस्टल बैग में बंद कर दिया जाता है। इसके बाद रेलगाड़ी के ज़रिए हर एरिये के RMS डाकघर तक भेजा जाता है। वहां से अपने आस पास के डिलीवरी डाकघरों में रेल या जहां रेल नहीं जाती

नफ़रत की दीवार यहां किसने उठा दी, बर्बाद मेरे घर को ये दीवार करेगी।

वहां बस के जरिए भेजा जाता है। डिलीवरी डाकघर पहुंच कर हर इलाक़े के डाकियों के हाथों में पहुंचने के बाद मेरी दस्तक आपके दौलत खाने पर हो पाती है। इस सफर के दौरान कभी कभी गलत बैग में बंध जाने या गलत जगह पहुंच जाने की वजह से आपके घर तक नहीं पहुंच पाता हूं। बस यहीं से मेरी गुमशुदगी हो जाती है। और आप लोग परेशान होकर नाराज़गी के साथ दफ़्तर माहेतैबा में अपनी शिकायत दर्ज़ करवाते हैं। जबकि वहां से मुझे पाबन्दी और एहतियात के तहत जोधपुर RMS डाकघर तक पहुंचा दिया जाता है। बस वहीं से अनजाने में किसी जल्दबाजी के या गफलत के चलते गलत बैग में बंध जाने से मिसिंग होने की दास्तान बन जाती है।

वक़्तन फ़'वक्तन मेरे कई ख़ुसूसी शुमारे भी छपे हैं। जिसमें "रोज़ा-नमाज़ नम्बर" "हज नम्बर" के अलावा राजस्थान के औलियाए किराम पर मुश्तमिल एक बहुत ही नायाब और तारीख़ी शुमारा "औलियाए राजस्थान नम्बर" शाया किया गया। मेरी ज़िन्दगी के सफ़र में कारेईन हज़रात के अलावा मुझे कारेईन की पहली पसंद बनाने के लिए मेहनत, मशक्कत और अपनी बेशक़ीमती मशवरों से नवाज़ते हुए इस मंज़िल तक पहुंचाने में जिन मुख़लिस हज़रात ने अपना तआवुन दिया उनकी ख़िदमात को कभी नहीं भुलाया जा सकता और ना ही उनकी ख़िदमात को नज़र अंदाज़ किया जा सकता। हालांकि ऐसे मुखलिस हज़रात की फहरिस्त बहुत लम्बी है इसलिए उनके एक एक नाम का ज़िक्र करना यहां मुमकिन नहीं होगा।

मेरी 30वीं सालगिरह के मौक़े पर इदारा माहे तैबा ने अपनी तरफ़ से आप जैसे मुखलिस कारेईन हज़रात के लिए ढेर सारे इनामों की बौछार करने का इरादा किया है। इस इनामी पिटारे में ढेरों इनामात हैं जिन्हें कारेईन हज़रात बिल्कुल मुफ़्त में हासिल कर सकते हैं। आप भी इस इनामी स्कीम में हिस्सा लें और अपने दोस्त अहबाब को भी माहनामा माहे तैबा का मेम्बर बना कर इस स्कीम में हिस्सेदार बनाएं। इनामी स्कीम की तफसील आपको इसी शुमारे में मिलेगी। आप ज्यादा से ज्यादा लोगों को इस रिसाले का मेम्बर बना कर इनाम के साथ साथ सवाब भी हासिल करें। मेरी आपसे पुलखुलूस अंदाज़ में गुज़ारिश है कि आप तवज्जोह के साथ इस इनामी स्कीम में हिस्सा लें और मिलने जुलने वाले रिश्तेदारों व दोस्तों को भी स्कीम का हिस्सा बनाने में मदद करें। उम्मीद है आप तवज्जोह के साथ मुझे अपने रिश्तेदारों व दोस्त अहबाब के घरों तक जरुर पहुंचाएंगे।

आपका अपना दीनी रिसाला
माहनामा माहे तैबा, जोधपुर

आप ज्यादा से ज्यादा लोगों को इस रिसाले का मेम्बर बना कर इनाम के साथ साथ सवाब भी हासिल करें। मेरी आपसे पुलखुलूस अंदाज़ में गुज़ारिश है कि आप तवज्जोह के साथ इस इनामी स्कीम में हिस्सा लें और मिलने जुलने वाले रिश्तेदारों व दोस्तों को भी स्कीम का हिस्सा बनाने में मदद करें।

सफ़रे हक के लिए सामान ले लो, रास्ते का सामान तक़वा है।

Scanned with CamScanner

ग़रीब नवाज़ के करम से ब-फैज़े रूहानी, हुज़ूर मुफ्ती-ए-आज़म हिन्द रहमतुल्लाहि अलैहि

माहनामा जोधपुर

माहे तैबा

इल्मी, दीनी और इस्लामिक मासिक पत्रिका

रूहानी सरपरस्त
मुफ्ती-ए-आज़म राजस्थान
अल्लामा मुहम्मद अशफाक़ हुसैन नईमी

एडीटर
एम फय्याज़ अहमद रज़वी

दिसम्बर 2021 • साल 30

रबीउस्सानी-जमादिल ऊला 1443

शुमारा - 359

एक शुमारा	30 ₹
सालाना (राजस्थान)	300 ₹
सालाना (बैरूने राज.)	350 ₹
कोरियर से (सालाना)	500 ₹
रजिस्टर्ड डाक से	550 ₹
बैरूनी मुमालिक	2000 ₹
लाइफ मेम्बर	8500 ₹

अनवारे माहे तैबा

ड्राफ्ट्स, मनीआर्डर्स और ख़तो किताबत करने का पता

माहनामा
माहे तैबा

मोहल्ला लखारान जोधपुर 342002 (राज.)
फोन : 0291-2637992 (O)
Bank A/C No. 61087516724 MAHE TAIBA
SBI BANK (Gulab sagar Branch)
IFSC Code : SBIN0031762

e-mail : mahetaibamonthaly@gmail.com

जो अल्लाह और रसूल की फ़रमाबरदारी करे उसने बड़ी कामयाबी पाई

रूहानी सरपरस्त
मुफ्ती-ए-आज़म राजस्थान
अल्लामा मुहम्मद अशफाक़ हुसैन नईमी

एडीटर

एम फय्याज़ अहमद रज़वी

नवम्बर 2021 • साल 30

रबीउल अव्वल-रबीउस्सानी 1443

शुमारा - 358

एक शुमारा	30 ₹
सालाना (राजस्थान)	300 ₹
सालाना (बैरुने राज.)	350 ₹
कोरियर से (सालाना)	500 ₹
रजिस्टर्ड डाक से	550 ₹
बैरुनी मुमालिक	2000 ₹
लाइफ मेम्बर	8500 ₹

अनवारे माहे तैबा

ड्राफ्ट्स, मनीआर्डर्स और ख़तो किताबत करने का पता

माहनामा
माहे तैबा

मोहल्ला लखारान जोधपुर 342002 (राज.)
फोन : 0291-2637992 (O)
Bank A/C No. 61087516724 MAHE TAIBA
SBI BANK (Gulab sagar Branch)
IFSC Code : SBIN0031762

e-mail : mahetaibamonthaly@gmail.com

अगर इबादत नहीं कर सकते तो गुनाह भी न करो।

ग़रीब नवाज़ के करम से ब-फैज़े रूहानी, हुज़ूर मुफ्ती-ए-आज़म हिन्द रहमतुल्लाहि अलैहि

माहनामा

माहे तैबा

जोधपुर

इल्मी, दीनी और इस्लामिक मासिक पत्रिका

रूहानी सरपरस्त
मुफ्ती-ए-आज़म राजस्थान
अल्लामा मुहम्मद अशफाक़ हुसैन नईमी

एडीटर
एम फ़य्याज़ अहमद रज़वी

अक्टूबर 2021 • साल 30

सफ़रुल मुज़फ़्फ़र-रबीउल अव्वल 1443

शुमारा - 357

एक शुमारा	30 ₹
सालाना (राजस्थान)	300 ₹
सालाना (बैरुने राज.)	350 ₹
कोरियर से (सालाना)	500 ₹
रजिस्टर्ड डाक से	550 ₹
बैरुनी मुमालिक	2000 ₹
लाइफ मेम्बर	8500 ₹

अनवारे माहे तैबा

ड्राफ़्ट्स, मनीआर्डर्स और ख़तो किताबत करने का पता

माहनामा माहे तैबा

मोहल्ला लखारान जोधपुर 342002 (राज.)
फोन : 0291-2637992 (O)

e-mail : mahetaibamonthaly@gmail.com

Bank A/C No. 61087516724 MAHE TAIBA
SBI BANK (Gulab sagar Branch)
IFSC Code : SBIN0031762

फरमाबरदारी के बग़ैर उम्मीदवारे रहमत होना हिमाकत है।

Scanned with CamScanner

रूहानी सरपरस्त
मुफ्ती-ए-आज़म राजस्थान
अल्लामा मुहम्मद अशफाक़ हुसैन नईमी

एडीटर
एम फय्याज अहमद रज़वी

अगस्त 2021 • साल 30

ज़िलहिज्जह-मोहर्रमुल हराम 1442-43

शुमारा – 355

एक शुमारा	30 ₹
सालाना (राजस्थान)	300 ₹
सालाना (बैरुने राज.)	350 ₹
कोरियर से (सालाना)	500 ₹
रजिस्टर्ड डाक से	550 ₹
बैरुनी मुमालिक	2000 ₹
लाइफ मेम्बर	8500 ₹

अनवारे माहे तैबा

ड्राफ्ट्स, मनीआर्डर्स और ख़तो किताबत करने का पता

माहनामा
माहे तैबा

मोहल्ला लखारान जोधपुर 342002 (राज.)
फोन : 0291-2637992 (O)
e-mail : mahetaibamonthaly@gmail.com
Bank A/C No. 61087516724 MAHE TAIBA
SBI BANK (Gulab sagar Branch)
IFSC Code : SBIN0031762

मतलब परस्त दोस्तों से कभी वफा की उम्मीद न रखो।

Scanned with CamScanner

ग़रीब नवाज़ के करम से ब-फ़ैज़े रूहानी, हुज़ूर मुफ़्ती-ए-आज़म हिन्द रहमतुल्लाहि अलैहि

माहनामा **माहे तैबा** जोधपुर

इल्मी, दीनी और इस्लामिक मासिक पत्रिका

रूहानी सरपरस्त
मुफ़्ती-ए-आज़म राजस्थान
अल्लामा मुहम्मद अशफ़ाक़ हुसैन नईमी

एडीटर
एम फ़य्याज़ अहमद रज़वी

मार्च 2021 • साल 30

रजबुल मुरज्जब-शाबानुल मोअज़्ज़म 1442

शुमारा - 350

एक शुमारा	30 ₹
सालाना (राजस्थान)	300 ₹
सालाना (बैरूने राज.)	350 ₹
कोरियर से (सालाना)	500 ₹
रजिस्टर्ड डाक से	550 ₹
बैरूनी मुमालिक	2000 ₹
लाइफ मेम्बर	8500 ₹

अनवारे माहे तैबा

ड्राफ़्ट्स, मनीआर्डर्स और ख़तो किताबत करने का पता

माहनामा **माहे तैबा**

मोहल्ला लखारान जोधपुर 342002 (राज.)
फोन : 0291-2637992 (O)
Bank A/C No. 61087516724 MAHE TAIBA
SBI BANK (Gulab sagar Branch)
IFSC Code : SBIN0031762

e-mail : mahetaibamonthaly@gmail.com

कुरआन मजीद में 700 बार नमाज़ की ताकीद की गई है।

Scanned with CamScanner

ग़रीब नवाज़ के करम से व-फैज़े रूहानी, हुज़ूर मुफ्ती-ए-आज़म हिन्द रहमतुल्लाहि अलैहि

माहनामा जोधपुर

माहे तैबा

इल्मी, दीनी और इस्लामिक मासिक पत्रिका

रूहानी सरपरस्त
मुफ्ती-ए-आज़म राजस्थान
अल्लामा मुहम्मद अशफाक़ हुसैन नईमी

एडीटर
एम फ़य्याज़ अहमद रज़वी

जनवरी 2021 • साल 30

जमादिल ऊला-जमादिस्सानी 1442

शुमारा - 348

30 वें साल का पहला शुमारा

एक शुमारा	30 ₹
सालाना (राजस्थान)	300 ₹
सालाना (बैरूने राज.)	350 ₹
कोरियर से (सालाना)	500 ₹
रजिस्टर्ड डाक से	550 ₹
बैरूनी मुमालिक	2000 ₹
लाइफ मेम्बर	8500 ₹

अनवारे माहे तैबा

ड्राफ्ट्स, मनीआर्डर्स और ख़तो किताबत करने का पता

माहनामा माहे तैबा

मोहल्ला लखारान जोधपुर 342002 (राज.)

फोन : 0291-2637992 (O)

Bank A/C No. 61087516724 MAHE TAIBA
SBI BANK (Gulab sagar Branch)
IFSC Code : SBIN0031762

e-mail : mahetaibamonthaly@gmail.com

तेरी तलब में कमी यक़ीनन कमी है ऐ आबिद।

ماہ طیبہ
MAHE TAIBA
ربیع الثانی - جمادی الاولی ۱۴۴۲ھ
Post. Regn. No.
JODHPUR/69/2018-20
हज़रत उबैदा बिन हारिस
इस्लाम में सदक़ा की अहमियत
जन्नतियों के लिए बीवियां
मॉर्डन फैमिली में इस्लामी तालीम की बरकत
दरगाह
हाजी अली मुम्बई
बुलन्द दरवाज़ा : दरगाह हज़रत
सूफ़ी हमीदुद्दीन नागौरी, नागौर शरीफ़
माहनामा
जोधपुर
माहे तैबा
एडीटर : एम. फय्याज़ अहमद रज़वी
दिसम्बर 2020
हदिया : 30 रुपये
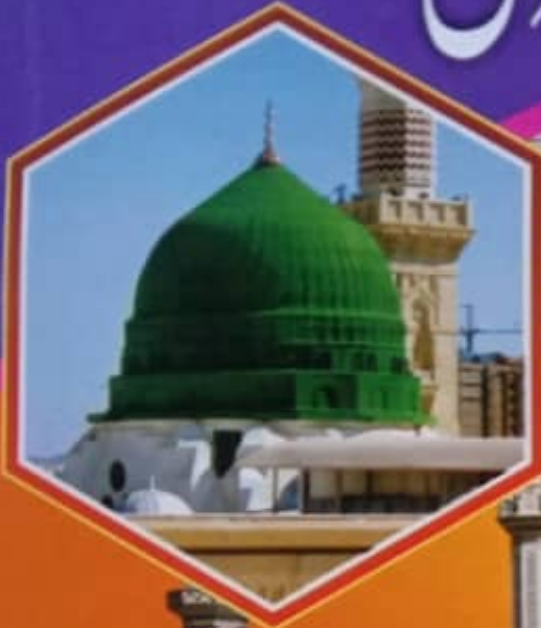
ग़रीब नवाज़ के करम से ब-फैज़े रूहानी, हुज़ूर मुफ्ती-ए-आज़म हिन्द रहमतुल्लाहि अलैहि

माहनामा

माहे तैबा

जोधपुर

इल्मी, दीनी और इस्लामिक मासिक पत्रिका

रूहानी सरपरस्त
मुफ्ती-ए-आज़म राजस्थान
अल्लामा मुहम्मद अशफाक़ हुसैन नईमी

एडीटर
एम फ़य्याज अहमद रजवी

दिसम्बर 2020 • साल 29

रबीउसानी-जमादिल ऊला 1442

शुमारा - 347

एक शुमारा	30 ₹
सालाना (राजस्थान)	300 ₹
सालाना (बैरुने राज.)	350 ₹
कोरियर से (सालाना)	500 ₹
रजिस्टर्ड डाक से	550 ₹
बैरुनी मुमालिक	2000 ₹
लाइफ मेम्बर	8500 ₹

अनवारे माहे तैबा

ड्राफ़्ट्स, मनीआर्डर्स और ख़तो किताबत करने का पता

माहनामा **माहे तैबा**

मोहल्ला लखारान जोधपुर 342002 (राज.)
फोन : 0291-2637992 (O)
Bank A/C No. 61087516724 MAHE TAIBA
SBI BANK (Gulab sagar Branch)
IFSC Code : SBIN0031762

e-mail : mahetaibamonthaly@gmail.com
SUBJECT TO JODHPUR JURISDICTION

काम मेरी निगाह में ऐसा ही मुक़द्दस है जैसे इबादत।

ग़रीब नवाज़ के करम से ब-फैज़े रूहानी, हुज़ूर मुफ्ती-ए-आज़म हिन्द रहमतुल्लाहि अलैहि

माहनामा

माहे तैबा

जोधपुर

इल्मी, दीनी और इस्लामिक मासिक पत्रिका

एडीटर
एम फ़य्याज़ अहमद रज़वी

अक्टूबर 2020 • साल 29

सफरुल मुज़फ्फ़र-रबीउल अव्वल 1442

शुमारा – 345

एक शुमारा	30 ₹
सालाना (राजस्थान)	300 ₹
सालाना (बैरूने राज.)	350 ₹
कोरियर से (सालाना)	500 ₹
रजिस्टर्ड डाक से	550 ₹
बैरूनी मुमालिक	2000 ₹
लाइफ मेम्बर	8500 ₹

अनवारे माहे तैबा

ड्राफ्ट्स, मनीआर्डर्स और ख़तो किताबत करने का पता

माहनामा माहे तैबा

मोहल्ला लखारान जोधपुर 342002 (राज.)
फोन : 0291-2637992 (O)
Bank A/C No. 61087516724 MAHE TAIBA
SBI BANK (Gulab sagar Branch)
IFSC Code : SBIN0031762

e-mail : mahetaibamonthaly@gmail.com

बेहतरीन ख़ैरात तालीम है।